ऑनलाइन शिक्षा

देगी बेहतर मौके, आईआईएम जैसे संस्थानों तक अब पहुंच हुई आसान

डॉ. भारत भास्कर
डायरेक्टर, आईआईएम रायपुर

कोविड-19 पैनडेमिक ने पूरी दुनिया के शिक्षा क्षेत्र को ऑनलाइन ला दिया है। हालांकि, पढ़ाई के इस तरीके को भविष्य में भी पूरी तरह अपनाए जाने को लेकर अलग-अलग मत हैं। जहां कुछ लोग इसे क्लास रूम शिक्षा का विकल्प नहीं मानते, वहीं कुछ इस बात के पक्षधर हैं कि इसके जरिये क्वालिटी एजुकेशन को दूर-दराज तक भी पहुंचाने में कामयाबी मिल सकती है। आईआईएम रायपुर के डायरेक्टर डॉ. भारत भास्कर भी ऑनलाइन एजुकेशन को फायदेमंद मानते हैं। उनके अनुसार ऑनलाइन एजुकेशन लर्निंग की क्वालिटी बढ़ा सकता है और इसने कई लोगों के लिए अपॉर्च्युनिटीज के नए रास्ते भी खोले हैं। इसके अलावा वे मानते हैं कि इंस्टीट्यूट्स को स्टूडेंट्स को क्वालिटी एजुकेशन देने में सक्षम बनना होगा। नासा के साथ काम कर चुके डॉ. भास्कर इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स व बिग डेटा मैनेजमेंट के क्षेत्र में रिसर्च के लिए जाने जाते हैं। इस इंटरव्यू में जानिए एमबीए एजुकेशन के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनकी राय क्या है।

क्या ऑनलाइन शिक्षा पारंपरिक शिक्षा जैसे परिणाम दे पाएगी?

ऑनलाइन एजुकेशन उन्हें शिक्षा का अवसर देता है जो फुल टाइम प्रोग्राम्स में एडमिशन नहीं ले सकते। इसके अलावा इससे उन्हें भी अवसर मिलते हैं जो सीमित सीट्स व कड़े कॉम्पिटीशन की वजह से बेहतर इंस्टीट्यूशंस में दाखिला नहीं ले पाते। हालांकि ऑनलाइन पढ़ते हुए स्टूडेंट्स को मोटिवेटेड रहने की जरूरत है, क्योंकि क्लास रूम के पुश मॉडल की बजाय यहां पुल मॉडल उपयोग में आता है।

कोरोना काल के बाद मैनेजमेंट स्टडीज किस तरह बदलेगी?

कोविड-19 ने उच्च शिक्षा के डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन में तेजी ला दी है। अधिकांश संस्थानों द्वारा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स को अपनाने की वजह से शिक्षा का यह मिलाजुला स्वरूप कहीं अधिक मैनेजमेंट स्टूडेंट्स तक अपनी पहुंच बनाएगा। हालांकि, ऑनलाइन शिक्षा क्लास में बैठकर होने वाली पढ़ाई का विकल्प नहीं है, लेकिन संतुलित तौर पर लागू करने पर यह लर्निंग की गुणवत्ता जरूर बढ़ा सकती है।

आईआईएम रायपुर पैनडेमिक का सामना कैसे कर रहा है?

स्टूडेंट्स तक पहुंच बढ़ाने के लिए आईआईएम रायपुर ने मई 2019 से ही मैनेजमेंट प्रोग्राम्स के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी आधारित शिक्षा को अपना लिया था। वहीं 2018 से ही सेंटर फॉर डिजिटल इकोनॉमी भविष्य में डिजिटल टेक्नोलॉजी के नेतृत्व में होने वाली इकोनॉमिक ग्रोथ की तैयारी कर रहा था। इसलिए जहां तक पैनडेमिक से निपटने की बात है, बदलाव हमारी यात्रा का अहम भाग रहा है।

संस्थानों की बढ़ती संख्या जॉब्स पर क्या असर डाल रही है?

इंस्टीट्यूट्स तभी प्रगति कर सकते हैं जब वे ऐसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दें जो रोजगार पाने योग्य प्रोफेशनल्स तैयार करे। बढ़ती अर्थव्यवस्था में क्वालिटी प्रोफेशनल्स की बड़ी मांग है इसलिए इंस्टीट्यूट्स की संख्या मुद्दा नहीं है, लेकिन चुनौती यह है कि उनके पास क्वालिटी एजुकेशन प्रदान करने वाली फैकल्टी हो। इसलिए मैनेजमेंट टीचर्स तैयार किए जाने पर जोर दिए जाने की जरूरत है।

एनईपी 2020 किस प्रकार के बदलाव लाने में सक्षम है?

यह पॉलिसी बड़ा बदलाव लाएगी और फैक्ट्स को दोहराने पर जोर डालने वाली शिक्षा प्रणाली के लिए राहत के समान है। तेजी से बदलती दुनिया में हमें ऐसे शिक्षित दिमाग चाहिए जो प्रक्रिया की नॉलेज से परे जाकर कल्पना व निर्माण करने में सक्षम होने के साथ-साथ परिस्थितियों का विश्लेषण करने का काम भी कर सकें। एनईपी ऐसे ही माइंड्स डेवलप करने पर जोर डालती है।

Dainik Bhasker, 8th Dec. 2020,p. 3 (DB Star).jpg